21

अदादि से दिवादि तक - अद्, हु, दिव् धातुएं

आप पूर्व में भ्वादिगण का परिचय प्राप्त कर चुके है। भ्वादिगण ही तिङन्त प्रकरण का हृदय है। क्योंकि धातु रूप प्रक्रिया में जो मूलस्थानीय सूत्र हैं वे भ्वादिगण में पढ़ चुके हैं। आप जानते है कि व्याकरण को सपोनक्रम में पढ़ना चाहिए। यदि भ्वादिगण को सम्यक् रूप पढ़ लिया तो अन्य गणों में कठिनाई नहीं होती। इस पाठ में अदादिगण, जुहोत्यादिगण और दिवादिगण की समालोचना करेंगे। प्राचीन आचार्यों का मत है कि तिङ् प्रत्यय परे रहते धातु को जिन शप् आदि प्रत्ययों का विधान होता है उनकी विकरण संज्ञा होती है। अत: शप् , श्यन्, श ये तीन विकरण है। प्रतिगण विकरण भेद है उनको जानना चाहिए। विकरण भेद से कैसे रूप भेद होता है इस आपको आगे दिखायेंगे। जैसे- अद्+शप् (लुक्) + ति=अत, हु+शप् (श्लु) + ति= जुहोति, दिव्+श्यन्+ति= दीव्यति। बहुत सी धातुओं के रूप बिना प्रक्रिया के लिखेंगे। वहां कारण यह है कि आप भ्वादिप्रकरण का ज्ञान लेकर उसकी प्रक्रिया में लिखने के लिए समर्थ होंगे। आपके बोधसौकर्म के लिए प्रतिगण प्रथम धातु के सभी रूप दिये गये है और उनको कष्ठस्थीकरण करने से गणपरिचय सरल होगा। अन्य धातु रूप अन्यग्रन्थों में देखे जाने चाहिए। यद्यपि पूर्वोक्त नवीन भ्वादिगण प्रकरण में जो सूत्र चर्चित है उनमें कुछ साधारण सूत्र होने से अग्रिम अदा आदि प्राण पाठ में अपेक्षा हो फिर भी उनकी व्याख्या पाठ विस्तार भय होने से नहीं करेंगे। प्रति धातु सभी रूप भी प्रदर्शित नहीं करेंगे। अप्रदर्शित रूप स्वयं सिद्ध करे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप -

- प्रतिगण विकरणों को जानेंगे;
- विकरण विधायक सूत्र को जानेंगे;

- विशेष सूत्रों को व्याख्या समझेंगे;
- अद् धातु के रूप सिद्ध कर सकेंगे;
- हु धातु के रूप सिद्ध कर सकेंगे;
- दिव् धातु के रूप सिद्ध कर सकेंगे;
- इन धातुओं को जानकर अन्य धातु रूप सिद्ध कर सकेंगे;
- प्रदर्शित वैकल्पिक रूप भी जानेंगे।

अदादिगण

अद् धातु भक्षणार्थ में विद्यमान होने से अदादिगण में पठित भूवादयो धावत से धातु संज्ञा, सकर्मक, अनिट् अन्ताकार उदात्तेत है। लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः सूत्र से कर्ता अर्थ में दश लकार प्राप्त होते हैं। वर्तमान क्रियावृत्ति की विवक्षा में वर्तमाने लट् से लट् प्रत्यय, उपदेशेऽजनुनासिक इत् से अकार की, हलन्त्यम् से टकार की इत्संज्ञा, तस्यलोपः से दोनों का लोप लकार शेष होकर अद्+ल् इस स्थिति में तिप्तस्झिसिप्थस्थ मिप्वस्मस् तातांझथासाथांध्वम् इड्वहिमहिङ् सूत्र से अष्टादश लादेश प्राप्त, उनमें से लः परस्मैपदम् सूत्र से परस्मैपद संज्ञा, उन सब में तिङ् प्रत्ययों में परस्मैपदसंज्ञक या आत्मनेपद संज्ञक हो इस सन्देह में अद् धातु से आत्मनेपद निमित्तहीन होने से शेषात् कर्त्तरि परस्मैपदम् सूत्र से कर्ता मं परस्मैपद संज्ञक नौ प्रत्यय प्राप्त और तिङ्स्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्ययोत्तमाः इस क्रम से तीनों प्रथम मध्यमोत्तम संज्ञा में मध्यमोत्तम का अविषय होने से शेषे प्रथमः सूत्र से प्रथम संज्ञक तीन प्राप्त, उनमें भी तान्येकवचनद्विवचन बहुवचनान्येकशः से प्राप्त प्रथमादि संज्ञक तीनों की एकवचन, द्विवचन बहुवचन संज्ञा होती है। वहाँ कर्ता की एकत्व की विवक्षा में द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने सूत्र से एकवचन संज्ञक तिप् प्रत्यय प्राप्त होता है। हलन्त्यम् से पकार की इत्संज्ञा तस्य लोपः से लोप होकर अद्+ति। तिप् की तिङत्व एवं धात्वधिकारोक्त होने से तिङ्शित् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा तथा कर्तरिशप् से शप् होकर अद्+शप्+ति स्थिति बनती है तब।

21.1 अदिप्रभृतिभ्यः शपः॥ (2.4.72)

सूत्रार्थ - अदादिगण की धातुओं से परे शप् का लुक् हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में अदिप्रभृतिभ्यः (5/3), शपः (6/1) ये दो पद है। अदिः प्रभृतिः (आदिः) येषा ते आदिप्रभृतयः इति तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहिसमासः तेभ्यः अदिप्रभृतिभ्यः। ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः सूत्र से लुक् (1/1) की अनुवृत्त है। दश धातुगणों में अदादि द्वितीय धातुगण है। सूत्रार्थ होता है - अदादिगण में पठित धातुओं से परे शप् का लुक् होता है। प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः सूत्र से प्रत्यय के अदर्शन को लुक् होता है। लुक् एवं लोप दोनों प्रत्यय अदर्शन रूप समान फलित होने पर भी पाणिनी ने लोप नहीं कहा। लोप होता है यह कहते है

टिप्पणियाँ

तो प्रत्यय लोपे प्रत्यलक्षणम् (1.1.62) से प्रत्ययलक्षण से इतः वित्तः विदन्ति आदि शब्दों में शप् निमित्तक गुण प्राप्त होता है। अतः उसके कारण के लिए लुक् कहा गया है। न लुमतागंस्य (1.163) सूत्र से प्रत्यय लक्षण निषेध होने पर शब्द निमित्तक गुण नहीं होता।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - अद्+शप्+ति स्थिति में अदिप्रभृतिभ्यः शपः सूत्र से शप् का लुक् होकर अद्+ति स्थिति में खरि च सूत्र से दकार को चर्त्व तकार आदेश होकर **अत्ति** रूप बनता है। इसी प्रकार प्रथम पुरुष द्विवचन में तस्,शप् लोप, चर्त्व एवं सकार को विसर्ग होकर **अत्तः।** बहुवचन में झि को अन्ति होकर **अदन्ति।** सिप्, थस् और थ में चर्त्व। उत्तम पुरुष में खर् का अभाव होने से चर्त्व नहीं होता।

इस प्रकार **लट्** परस्मैपद में रूप- **अत्ति अत्तः अदन्ति। अत्सि अत्थः अत्थ। अद्मि अद्वः अद्मः।**

(सूत्रम् खरि च (8.4.55) खर् परे होने पर झलों को चर् हो।)

लिट् में अद्+लिट् इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है -

21.2 लिट्यन्यतरस्याम्।। (2.4.40)

सूत्रार्थ - लिट् परे होने पर अद् के स्थान पर घस्लृ आदेश विकल्प से हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में लिटि (7/1), अन्यतस्याम् सप्तमीविभक्ति प्रतिरूपक अव्यय ये दो पद है। अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति सूत्र से अदः (6/1) एवं लुङ्सनोर्घस्लृ सूत्र से घस्लृ (1/1) की अनुवृत्ति है। लृकार अनुनासिक होने से इत् संज्ञक है। घस् शेष रहता है अनेकाल् होने से सर्वादेश होता है। लृदित् करने का प्रयोजन पुष्पऋिद्युताघ्लृदितः सूत्र से च्लि को अङादेश विधान है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - अद् धातु से अनद्यतनभूत परोक्षार्थवृत्ति की विवक्षा में तिप् प्रत्यय, अनुबन्ध होकर अद्+ति स्थिति में परस्मैपदानां णलतुसुस् थलथुस णल्वमाः सूत्र से तिप् को णल् सर्वादेश एवं अनुबन्ध लोप होकर अद्+अ स्थिति में अनेकाल्शित् सर्वस्य की परिभाषा से सम्पूर्ण अद् को लिट्यन्यतस्याम् सूत्र से घस्लृ ओदश एवं अनुबन्ध होकर घस्+अ। लिटिधातोरनभ्यासस्य से द्वित्व पूर्व घस् की पूर्वोऽभ्यासः से अभ्यास संज्ञा, हलादि शेषः से अभ्यास के आदि हल् शेष होकर घ घस्+अ, कुहोश्चुः से घकार को झकार तथा अभ्यासे चर्च से झकार को चकार होकर चघस्+अ। अत उपधायाः से उपधासंज्ञक घकारोत्तर अकार को वृद्धि आकार होकर **जघास** रूप सिद्ध होता है।

लिट् में प्रथमपुरूष द्विवचन में तस् को अतुस्, अद् को घस्लृ, द्वित्व होकर घस् घस्+अतुस् स्थिति में गमहनजनखनघसा लोपः क्ङित्यनङि (6.4.98) सूत्र से आदि उपधा का लोप प्राप्त द्विवचनेऽचि से निषेध। कुहोश्चुः से अभ्यास के घ को झ, जश्त्व होकर जकार, हलादि शेषः से आदि हल् शेष ज घस्+अतुस् इस अवस्था में उपधा लोप होकर ज ध् स् अतुस् स्थिति में सकार प्रत्यय का अवयव या आदेश नहीं होने से आदेश प्रत्यययोः सूत्र प्रवृत्त नही होता तब।

21.3 शासिवसिघसीनां च।। (8.3.60)

सूत्रार्थ - इण् प्रत्याहार या कवर्ण से परे शास्, वस्, घस् के सकार का षकार आदेश हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में शासिवसिघसीनाम् (6/3), च अव्यय ये दो पद है। इण्कोः (5/1) का अधिकार है। सहेः साडः सः से सः (6/1), अदपदान्तस्य मूर्धन्यः से मूर्धन्य (1/1) की अनुवृत्ति है। इण् प्रत्याहार है। यहां णकार लण् से ग्रहित है न कि अइइण् से। कुः से कवर्ग का ग्रहण है। सूत्रार्थ होता है- इण् प्रत्याहार या कवर्ण से परे शास्, वस्, घस् के सकार का षकार आदेश होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व ज घ् स्+अतुस् स्थिति में प्रकृत्त सूत्र से सकार को षकार (मूर्धन्य) होकर ज घ् ष् अतुस्। इसके बाद खरि च से घकार को ककार होकर ज क् ष् अतुस् वर्ण सम्मेल तथा सकार का रुत्व एवं विसर्ग होकर **जक्षतुः** रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार **चक्षुः** की प्रक्रिया है।

लिट् के मध्यम पुरूष एकवचन की विवक्षा में सिप्, सिप् को थल् होकर घस्+थ, आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् आगम प्राप्त किन्तु उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध। परन्तु क्रादिनियमानुसार नित्य इट् आगम में द्वित्व आदि कार्य होकर **जघसिथ** रूप बनता है। इसी प्रकार वस् और मस् में इट् आगम करना चाहिए।

तिप्-सिप् को छोड़कर अन्यत्र असंयोगाल्लिट् कित् से कित्वत् भाव होता है। अतः वहाँ गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि सूत्र से उपधालोप में **जक्ष** रूप बनता है। उत्तम पुरूष एकवचन में मिप्, णल्, णल् को विकल्प से णित् होने से अत उपधायाः से वृद्धि होकर **जघास** रूप सिद्ध होता है णित्व अभाव में वृद्धि न होकर **जघस** रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार लिट् परस्मैपद से घस्लृ आदेश के पक्ष में रूप **जघास, जक्षतुः, जक्षुः। जघसिथ्, जक्षथुः, जक्षः। जघास-जघस, जक्षिव, जक्षिम।** घस्लृ आदेश के अभाव पक्ष में अभ्यास के अकार को दीर्घ आकार होकर **आद, आदतुः आदुः** रूप सिद्ध होते है।

सूत्र - अत आदेः (7.4.70) अभ्यास के आदि अकार को दीर्घ हो।

सिप् में सिप् को थल् होकर अद्+थ स्थिति में अदः दकारान्तानुदात्त में पाठ होने से इट् निषेध होता है। किन्तु क्रादिनियम से पुनः इट् प्राप्त होता है। उससे उपदेशेऽत्वतः सूत्र से थल् में इट् निषेध में ;तो भारद्वाजस्य सूत्र से विकल्प से इट् प्राप्त होता है, किन्तु थल् में नित्य इट् विधान अभीष्ट है। अतः आगे सूत्र दिया है।

21.4 इडत्त्यर्तिव्ययतीनाम्।। (7.2.66)

सूत्रार्थ - अद्, ;, और व्येञ् इन तीन धातुओं से परे णल् को नित्य इट् का आगम हो।

सूत्र व्याख्या – इस विधि सूत्र में इट् (1/1), अत्तयर्तिव्ययतीनाम् (6/3) ये दो पद है। अचस्तास्वत्थल्यनिटो नित्यम् से थलि पद की अनुवृत्ति है। तस्य च षष्ठ्येकवचनान्त से विभिक्ति विपरिणाम है। अद्, ऋ व्येञ् इन से इक्श्तिपौ धातुनिर्देशे से शित् प्रत्यय है। उससे अत्तिश्च अर्तिश्च व्ययतिश्च तेषाम् अत्त्यर्तिव्ययतीनाम् इति इतरोतरयोगद्वन्द्वः। इट् का टकार इत्संज्ञक है। आद्यन्तौ टकितौ से आदि अवयव होता है। सूत्रार्थ होता है – अद्, ऋ, और व्येञ् इन तीन धातुओं से परे णल् को नित्य इट् का आगम होता है।

उदाहरण – ; धातु से आरिथ। व्येञ् धातु से विव्ययिथ। अद् धातु से **आदिथ।**

सूत्रार्थसमन्वय – पूर्व में अद्+थ स्थिति में अद् से परे थल् प्रत्यय है। अतः प्रकृत सूत्र से नित्य इडागम, द्वित्व, हलादिशेष, होकर अ अद् इ+थ तथा अतः आदेः से अभ्यास के अकार को दीर्घ एवं सवर्णदीर्घ तथा वर्ण सम्मेल होकर आदिथ रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार लिट् में घस्लृ आदेश के अभाव पक्ष में आद्, आदतुः, आदुः। आदिथ आदथुः आद। आद, आदिव, आदिम रूप होते है। पाठ विस्तार भय से सभी को सूत्र प्रयोग करके प्रदर्शित नहीं किया गया।

भविष्यत्यनद्यतनार्थ क्रियावृत्ति की विवक्षा में अनद्यत ने लुट् से कर्ता अर्थ में लुट्, प्रथमाएकवचन में तिप्, अनुबन्धलोप, तिङ्शित् सार्वधातुकम् से तिप् की सार्वधातुकसंज्ञा, कर्ता अर्थ में कर्तरिशप् से प्राप्त शप् का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटोः सूत्र से धातु से परे तासी प्रत्यय होकर अद् तास्+ति स्थिति में यथासख्युनुपदेशः समानाम् की परिभाषा से लुटः प्रथमत्य डारौरसः सूत्र से तिप् को डा आदेश अनुबन्धलोप होकर अद्+तास्+आ, हेः सूत्र से अभ्यस्त के टि आस् का लोप अद्+त+आ, खरिच से दकार को तकार होकर **अत्ता** रूप सिद्ध होता है।

लुट् परस्मैपद में रूप–**अत्ता अत्तारौ अत्तारः। अत्तासि, अत्तास्थः, अत्तास्थ। अत्तास्मि, अत्तास्वः अत्तास्मः।** लुट् में सर्वत्र एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र से इट् निषेध होता है।

भविष्यद् अर्थ में अद् धातु से क्रियार्थ क्रिया के न होने पर लुट् शेषे च सूत्र से कर्ता अर्थ में लृट्, प्रथमपुरूषएकवचन में तिप्, अनुबन्धलोप, तिङ्शित् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा तथा कर्तरिशप् से शप् प्राप्त किन्तु स्यतासीलृलुटोः से स्य आदेश, सार्वधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होकर अद्+स्य+ति उसके बाद खरिच से दकार को तकार होकर **अत्स्यति** रूप सिद्ध होता है। अन्य रूप इसी प्रकार समझें। लृट् परस्मैपद में रूप–**अत्स्यति, अत्स्यतः अत्स्यन्ति। अत्स्यसि अत्स्यथः अत्स्यथ। अत्स्यामि अत्स्यावः, अत्स्यामः।**

विधिनिमन्त्रामन्त्राधीष्टसम्प्रश्न प्रार्थन आदि अर्थों में लोट् च से लोट्, प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में तिप्, सार्वधातुकसंज्ञा, कर्ता अर्थ में शप् आगम, शप् को लुक् होकर अद् ति। एरूः से ति के इ को उ तथा चर्त्व होकर **अत्तु** रूप सिद्ध होता है। पक्ष में ङिच्च सूत्र की अपेक्षा से परत्व से अनेकाल्शित् सर्वस्य की परिभाषा से तुह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतप्स्याम् सूत्र से तु को तातङ् सर्वादेश होकर **अत्ताम्** रूप सिद्ध होता है। तस् में लोटोलड्वत् सूत्र से लङ् के समान तस्थस्थमिपाम् तन्तान्तामः से ताम् होकर अत्ताम् रूप सिद्ध होता है। सि प्रत्यय में झकार के स्थान पर अन्त् आदि आदेश होकर अदन्तु रूप बनता है। मध्यपुरूष एकवचन में सिप्, अनुबन्ध लोप, सेर्ह्यपिच्च से सिप् को हि आदेश शप् को लुक् होकर अद्+हि तब–

21.5 हु झल्भ्यो हेर्धिः॥ (6.4.101)

सूत्रार्थ - हु तथा झलन्त धातु से परे हि को धि आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में हुझल्भ्यः (5/3), हेः (6/1), धिः (1/1) ये तीन पद है। हुश्च झलश्च तेषां इतरेतरयोगद्वन्द्व हुझलः तेभ्यः हुझल्भ्यः इति पंचमी बहुवचन। हेः षष्ठ्येकवचनान्त। धिः प्रथम एकवचनान्त है। अंगस्य का अधिकार है। उसका झल्भ्यः विशेषण है अतः तदन्त विधि में झलन्तेभ्यः अर्थ प्राप्त होता है। धि अनेकाल् है। अनेकाल्शित् सर्वस्य परिभाषा से हि के स्थान पर धि सर्वादेश होता है। हु (हवन करना) जुहोत्यादिगण की प्रथम धातु है सूत्रार्थ होता है- हु तथा झलन्त धातु से परे हि को धि आदेश होता है।

उदाहरण - हु धातु से उदाहरण आगे देखेंगे। यहा झलन्त का उदाहरण है। पूर्व में अद् हि स्थिति में प्रकृत सूत्र से धि सर्वादेश होकर **अद्धि** रूप सिद्ध होता है। पक्ष में तातङ् से अत्तात्। मध्यम पुरूष में रूप अद्धि-अत्ताम्, अत्तम् अत्त रूप बनते है।

उत्तम पुरूष एक वचन में मिप्, शप् लोप, मेर्निः से मि को नि आडुत्तमस्य पिच्च से आट् का आगम होकर अदानि रूप बनता है। वस् से अदाव, मस् से अदाम। नित्यं ङितः से सकार का लोप होता है।

अनद्यतनभूतक्रियावृत्ति की विवक्षा में अनद्यतने लङ से कर्ता अर्थ में आडजादीनाम् से आट् आगम होता है, प्रथमपुरूष एकवचन में तिप्, शप् को लुक्, इतश्च से ति के इकार का लोप होकर आ+अद्+त् स्थिति बनती है। तब-

21.6 अदः सर्वेषाम्॥ (3.4.111)

सूत्रार्थ - अद् धातु से परे अपृक्त सार्वधातुक को अट् का आगम हो सब आचार्यों के मत में।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में अदः 5/1, सर्वेषाम् (66/3) ये दो पद है। अस्तिसिचोऽपृक्ते से अपृक्ते पद की अनुवृत्ति है। उसका विभक्ति विपरिभाष से अपृक्तस्य षठ्यन्तिता से विपरिणाम है। अङ् गार्ग्यगालवयोः से अट् (1/1) पद की अनुवृत्ति है। सूत्रार्थ होता है- अद् धातु से उत्तर अपृक्त सार्वधातुक प्रत्यय को अट् का आगम होता है सभी आचार्यो के मत में। टित् होने से आदि अवयव होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व आ+अद्+त् यहाँ अपृक्त सार्वधातुक तकार है अतः प्रकृत्त सूत्र से अट् का आगम होकर अ+अद्+अ+त् तथा वर्ण सम्मेलन एवं आटश्च से वृद्धि होकर **आदत्** रूप सिद्ध होता है। तस् झि, थस्, थ, वस्, मस् में अट् नहीं क्योंकि एकाल् प्रत्यय का अभाव है। अद् धातु से झि में आट्+अद्+झि (अति) इकार लोप, वृद्धि, तथा संयोगन्तस्य लोपः होकर **आदन्** रूप बनता है। सिप् में आद्+अस्, स को रूत्व विसर्ग होकर **आदः** रूप बनता है। वस् एवं मस् में नित्यं ङितः से सकार का लोप होता है। लुङ् परस्मैपद में **आदत् आत्ताम्, आदन्। आदः आत्तम् आत्त। आदम् आद्व, अद्म** रूप बनता है।

टिप्पणियाँ

विधि निमन्त्रण आमन्त्रण अधीष्ट सम्प्रश्न प्रार्थना वृत्तितत्व की विवक्षा में विधिनिमन्त्रामन्णधीष्टसम्प्रश्न प्रार्थनेषु लिङ् से अद् धतु से प्रथमपुरूष एकवचन में तिप्, अनुबन्ध लोप, शप् लोप अद्+ति, यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च सूत्र से यासुट् का आगम, अनुबन्धलोप अद्+यास्+ति, सुट् तियोः सूत्र में तकार को सुट् आगम, अनुबन्ध लोप अद्+यास्+स्+ति। लिङ सार्वधातुक होने से लिङ सलोपोऽनन्त्यस्य सूत्र से अनन्त्य दोनो सकारों का लोप होकर तथा इतश्च से इकार का लोप होकर **अद्यात्** रूप बनता है। झि में आद्या उस् अवस्था में उस्यपदान्तात् सूत्र से पररूप एवं सकार विसर्ग होकर **आदयुः**। तस्तस्थमिपां तान्तन्ताम: सूत्र से तस् को ताम्, थस् को तम् थ को त आदेश। वस्, मस् में नित्य सकार लोप, इस प्रकार लिङ में रूप **अद्यात् आद्याताम् अद्युः। अद्याः, अद्यातम् अद्यात। अद्याम्, अद्याव, अद्याम।**

आशीर्वाद अर्थ में आशिषिलिङ्लोटौ सूत्र से कर्ता अर्थ में आशीर्लिङ् में तिप्, यासुट्, सुट्, इतश्च से इकार लोप अद्+यास्+स्+त् स्थिति में लिङाशिषि से सकार का लोप नहीं। स्कोः संयोगाद्योरन्ते च सूत्र से संयोग के आदि सकार का लोप होकर अद्यास्+त् तथा पुनः संयोगादि सकार लोप होकर **अद्यात्** रूप बनता है। तस् में तस् का ताम् होकर **अद्यास्ताम्**, रूप बनता है - आशीर्लिङ में रूप-**अद्यात्, अद्यास्ताम्, अद्यासुः। अद्याः, अद्यास्तम्, अद्यास्त। अद्यासम्, अद्यास्व, अद्यास्म।**

लुङ में घस्लृ इत्यादि विधायक सूत्र होते है -

21.7 लृङ्सनोर्घस्लृ॥ (2.4.37)

सूत्रार्थ - लृङ् या सन् प्रत्यय परे होने पर अद् के स्थान पर घस्लृ आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में लुङ्सनोः (7/2), घस्लृ (1/1) ये दो पद है। लुङ् च सन् च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्व। लुङ्सनौ, तयोः लुङसनोः। अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति सूत्र से अदः (6/1) की अनुवृत्ति है। घस्लृ का लृकार अनुनासिक होने से इत्संज्ञा तथा घस् शेष रहता है। अनेकाल् होने से सम्पूर्ण के स्थान पर होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - अद् धातु से भूतार्थ क्रियावृत्ति की विवक्षा में लुङ् से कर्ता अर्थ में प्रथमपुरूष एकवचन में तिप्, इकारलोप, प्रकृतसूत्र से अद् के स्थान पर घस्लृ, सर्वादेश एवं अनुबन्ध लोप घस्+त। शप् का बाध कर च्लि, च्लौ पुषादिद्युतघ्लृदितः परस्मैपदेषु सूत्र से च्लि के स्थान पर अङ् आदेश लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र से घस् अंग को अट् आगम, अनुबन्ध लोप, होकर अ घस्+अ+त् वर्ष सम्मेलन होकर **अघसत्** रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार लुङ में **अघसत् अघसताम्, अघसन्। अघसः अघसतम् अघसत। अघसम्, अघसाव अघसाम।**

क्रिया की अनिष्पत्ति में लिङ निमित्तेलृङक्रियातिपति से अद् से कर्ता अर्थ में लुङ्, आडजाडीनाम् सूत्र से आट् आगम, आटश्च से वृद्धि प्रथमपुरूष एकवचन में तिप्, इकार लोप, शप् का स्य होकर, आ+अद्+स्य+त् इट् निषेध एवं चर्त्व होकर **आत्स्यत्** रूप बनता है। लृङ में रूप **आत्स्यत् आत्स्यताम् आत्स्यन्। आत्स्यः आत्स्यतम्, आत्स्यत। आत्स्यम्, आत्स्याव, आत्स्याम।**

पाठगत प्रश्न 21.1

1. धातु गण कितने हैं?
2. शप् का लुक किससे होता है?
3. अघसत् यहा घस्लृ आदेश किससे होता है?
4. अदः सर्वेषाम् का अर्थ क्या है?
5. अद्धि में धि आदेश किससे होता है?
6. जक्षुः में षत्व किससे होता है?
7. जघास में घस्लृ आदेश किससे होता है?
8. अदिप्रभृतिभ्यः शपः यहाँ प्रभृति शब्द का अर्थ क्या है?
9. अद् धातु का क्या अर्थ है?
10. अद् धातु लिट प्रथम पुरूषैकवचन में कितने और कौन से रूप होते है?

जुहोत्यादिगणः

हुदानादनयोः इस सकर्मक परस्मैपद अनिट् जुहोत्यादिगणीय धातु से लट् के प्रथमपुरूष एकवचन में तिप्, सार्वधातुकसंज्ञा होने से कर्तरिशप् होकर हुः शप् +ति स्थिति बनती है तब-

21.8 जुहोत्यादिभ्यः श्लुः॥ (2.4.75)

सूत्रार्थ - जुहोत्यादिगण से शप् को श्लु (अदर्शन)हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में जुहोत्यादिभ्यः (5/3), श्लुः (6/1) ये दो पद है। जुहोतिः आदिः येषां ते जुहोत्यादयः तभ्यः जुहोत्यादिभ्यः। जुहोत्यदिगण दशगणो में से तृतीय है। जुहोति यह हु धातु धातु निर्देश के लिए इक् श्तिपौ धातुनिर्देशे वार्तिक से श्तिप् रूप होता है। सूत्रार्थ होता है- जुहोत्यादिगण से विहित शप् का श्लु होता है। श्लु की भी प्रत्यय अदर्शन संज्ञा होती है। जैसे अदादिगण में लुक् श्लु और लुप् संज्ञात्रय होती है। उससे हु आदि धातुओं से विहित शप् का अदर्शन ग्लित होता है। श्लु और लुप् दोनों का प्रत्ययादर्शन रूप समान फलकत्व होने पर भी यहाँ श्लु कहा है न कि लुप्। क्योंकि श्लु कहते है तो प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् से प्राप्त प्रत्ययलक्षण कार्य का न लुमतांगस्य सूत्र से निषेध होता है। किन्तु लोप होने पर स्थानिवद्भाव होता है। श्लु करण में स्थानिवद् भाव नहीं है। श्लु संज्ञा का फल अग्रिम सूत्र में ज्ञात करेंगे।

टिप्पणियाँ

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व में हु+शप्+ति स्थिति में प्रकृत सूत्र से शप् को श्लु होकर हु+ति स्थिति बनती है।

21.9 श्लौ॥ (6.1.10)

सूत्रार्थ - श्लु परे होने पर धातु को द्वित्व हो।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र में श्लौ (7/1) एक पद है। यह विधि सूत्र है। लिटि धातोरनभ्यास्य से धातोः (6/1), एकाचो द्वे प्रथमस्य से द्वे (1/2) पदो की अनुवृत्ति होती है, अतः सूत्रार्थ होता है-श्लु परे होने पर धातु को द्वित्व होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व में हु+ति स्थिति श्लु करने पर हुई। अतः प्रकृत सूत्र से द्वित्व होकर हु हु ति स्थित में पूर्वोऽभ्यासः से प्रथम भाग की अभ्यास संज्ञा तथा कुहोश्चुः से अभ्यास के हु को चवर्ग गुणत होने से झकार होकर झु हु ति, अभ्यासे चर्च से जश्त्य होकर जुहु+ति एवं तिप् सार्वधातुक होने से सार्वधातुकार्धधातुकयोः से हु के उकार को गुण ओ होकर **जुहोति** रूप सिद्ध होता है।

तिप्, सिप्, मिप् इन पित् प्रत्ययों को छोड़कर अन्य सभी प्रत्ययों को सार्वधातुकमपित् से ङित्वद् होने से क्विङति च से गुण निषेध होकर तस् में **जुहुतः** रूप बनता है।

प्रथम पुरूष बहुवचन में झि प्रत्यय, शप् को श्लु, द्वित्व कार्य, अभ्यास चर्त्व, जश्त्व होकर जु हु झि स्थिति में झोऽन्तः से झ को अन्तादि प्राप्त किन्तु-

21.10 अदभ्यस्तात् ॥ (7.1.4)

सूत्रार्थ - अभ्यस्त से परे प्रत्यय के अवयव झ् को अत् आदेश

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में अत् (1/1), अभ्यस्तात् (5/1) ये दो पद है। आयनेयीनीयियः ढ्रढखछघां प्रत्ययादीनाम् सूत्र से अनुवृत्त प्रत्ययादिनाम् इस प्रत्ययादि से षष्ठ्येकवचनान्त से विपरिणाम है। झोऽन्तः से झः (6/1) की अनुवृत्ति है। अभ्यस्तम् (6./5) सूत्र से अभ्यास संज्ञा होती है। सूत्रार्थ होता है - अभ्यास्त संज्ञक धातु से परे प्रत्यय के अवयव झकार के स्थान पर अत् आदेश होता है। विभक्तिसंज्ञक झि के झकार के स्थान पर विधीयमान अत् आदेश भी विभक्ति संज्ञक होता है। अतः हलन्त्यम् से प्राप्त तकार की इत्संज्ञा का न विभक्तौतुस्माः से निषेध होता है।

सूत्र - उभे अभ्यस्तम् (6/5) षाष्ठद्वित्वप्रकरण में जो दो पद होते है उन दोनों की समुदित रूप से अभ्यस्त संज्ञा होती है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व में जु हु सि स्थिति में जुहु अभ्यस्त संज्ञक है अतः इससे परे प्रकृत सूत्र से झि के झ को अत् आदेश होकर जुहु अत्+इ स्थिति बनती है। इकोयणचि का बाध होकर अचि श्नु धातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से उवङ प्राप्त उसका भी बाध होकर हु श्नुवोः सार्वधातुके सूत्र से द्वितीय हु के उकार को वकार होकर जु ह् व् अति तथा वर्णसम्मेलन होकर

जुहूवति रूप सिद्ध होता है। तिप् सिप् मिप् में गुण होता है। अन्यत्र अपित् होने से गुण का निषेध होता है। हु धातु लट् परस्मैपद में रूप - **जुहोति, जुहुतः जुहूवति। जुहोषि, जुहुथः, जुहुथ। जुहोमि जुहुवः जुहुमः**।

लिट् में विशेषता के लिए सूत्र आरम्भ किये जाते है।

21.11 भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च॥ (3.1.39)

सूत्रार्थ - लिट् परे होने पर भी, ह्री, भृ तथा हु धातु से परे विकल्प से आम् प्रत्यय हो जाता है तथा आम् परे रहते श्लु की तरह कार्य भी हो जाते हैं।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में भी ह्री भृ हुवाम् (6/3), श्लुवत् 4 एवं च अव्ययपद में तीन पद है। भीश्च ह्रीश्च भा च हुश्च तेषाम् इतरेतरयोगद्वन्द्वे भीह्रीभृहुवः तेषाम् भीह्रीभृहुवाम्। भीह्रीभृहुवाम् यह पंचभ्यर्थ में षष्ठी प्रयोग है। श्लौ इव इति श्लुवत् यहा सप्तम्यन्त होने से वति प्रत्यय है। कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि सूत्र से लिटि (7/1) आम् (1/1) इन दो पदों की आवृत्ति है। तथा उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम् सूत्र से अन्यतरस्याम् (7/1) की अनुवृत्ति है। प्रत्ययः (1/1) परश्च (1/1) इन दो का अधिकार है। सूत्रार्थ होता है - लिट परे भी, ह्री, भृ, हु धातु से परे आम् प्रत्यय होता है वह आम् प्रत्यय श्लु वत् होता है अर्थात् श्लु परे रहते द्वित्व कार्य होता है उसी प्रकार आम् परे भी होगा यह तात्पर्य है। किन्तु ये सभी कार्य विकल्प से होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - प्रसंगवश यहाँ हु धातु का उदाहरण प्रदर्शित किया जा रहा है। अन्य उदाहरण दूसरे ग्रन्थों में देखने चाहिए। पूर्वोक्त प्रकार से हु धातु से लिट् अनुबन्ध लोप होकर हु+ल् प्रकृत सूत्र से आम् प्रत्यय उसको श्लुवद् भाव में श्लौ सूत्र से द्वित्व कार्य अभ्यास को कुहोश्चः से चुत्व तथा झकार को अभ्यासे चर्च से जश्त्व होकर जु हु आम्+ल यहाँ आम् की तिङ्शित् भिन्न होने से आर्धधातुकं शेषः से आर्धधातुक संज्ञा सार्वधातुकार्धधातुकयोः से हकारोत्तरवर्ति उकार को गुण ओकार तथा अयादि होकर **जुहवाम्** बनता है। आमः सूत्र से आम् से परे लिट् का लुक् धात्वधिकार में विहित होने से कृदतिङ् सूत्र से कृत् संज्ञा में जुहवाम् की प्रत्ययलक्षण से कृदन्तत्व होने पर कृतद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से सु प्रत्यय होकर जुहवाम्+सु इस स्थिति में आमः सूत्र से सु का लोप होकर सुप्तिङन्तं पदम् से पद संज्ञा होती है। उसके बाद जुहवाम् इसको आमन्त होने से कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि सूत्र से लिट् परक कृञ् धातु के अनुप्रयोग में जुहवाम् कृ+लिट् अनुबन्ध लोप होकर जुहवाम्+कृ+ल् बनता है। प्रथमपुरूष एकवचन में तिप्तसि. सूत्र से तिप् प्रत्यय एवं अनुबन्धलोप, जुहवाम्+कृ+ति, परस्मैपदानां णलतुसुस् थलथुस णल्वमाः से सूत्र से तिप् को णल् सर्वादेश, अनुबन्धलोप जुहवाम्+कृ+अ। लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र से अनभ्यासधातु के अवयव एक अच् कृ को द्वित्व होकर जुहवाम् कृ कृ+अ उरत् सूत्र से अभ्यास के ऋकार को उरण्रपरः की सहायता से अर् तथा हलादिशेषः से आदि हल् शेष होकर जुहवाम् क कृ+अ, कहोश्चुः से ककार को चकार होकर जुहवाम् च कृ+अ स्थिति में णल् णित् होने से अचोञ्णिति सूत्र से कृ के ऋकार को वृद्धि आर् होकर जुहवाम् च+कार्+अ। मोऽनुस्वर

से अपदान्त म् को अनुस्वार होकर जुहवांचकार। तथा पदान्तस्य से अनुस्वार को परसवर्ण होकर जुहवाञ्चकार रूप सिद्ध होता है।

विशेष - आम्प्रतयय की प्रकृति हु धातु परस्मैपदी है इस हेतु से लिट् में अनुप्रयुज्यमान कृ धातु भी परस्मैपदी ही होती है। भू धातु, एवं अस् धातु से अनु प्रयोग में भी दोनों का परस्मैपद होता है न कि आत्मनेपद। यहाँ भू धातु के अनुप्रयोग में जुहवाम्बभूव, जुहवांबभूव दो रूप बनते हैं। अस् धातु से अनुप्रयोग में जुहवामास एक रूप बनता है। आगे कृ, भू, अस् इनका अनुप्रयोग से निष्पन्न रूप प्रदर्शित किये जायेंगे।

अभावपक्ष में। हु धातु से लिट् में तिप्, णल् अनुबन्धलोप होकर हु+अ स्थिति में लिटि धातोरनभ्यसस्य सूत्र से द्वित्व, अभ्यास के हु के हकार को चुत्व, झकार को जश्त्व, होकर जुहु+अ अचोञ्णिति से से हु के उ को वृद्धि औ तथा अवादेश होकर जुहाव रूप बनता है। अजादि प्रत्ययों परे हो तो अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से हु के उकार के स्थान पर उवङ् आदेश होकर जुहुवतुः, जुहुवः, जुहुवथुः आदि रूप सिद्ध होते है। हु धातु से सिप् में सिप् को थल्, आर्धधातुकस्येड्वलादेः से इड् आगम प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र से उसका निषेध प्राप्त उसको भी बाध करके क्रादिनियमानुसार नित्य इट् प्राप्त उसका भी अचस्तास्वल्थल्यलिटो नित्यम् से निषेध प्राप्त है। तब उसका बाध करके भारद्वाज नियम से वैकल्पिक इट् में जुहोथ/ जुहविथ दो रूप सिद्ध होते हैं। उत्तमपुरूष एकवचन में णलुत्तमो वा सूत्र से विकल्प से णल् का णित्त्व होने से वृद्धि अभाव पक्ष में जुहव, अचोञ्णिति से वृद्धिपक्ष में जुहाव दो रूप बनते हैं। वस् और मस् क्रादिनियमानुसार नित्य इट् आगम में उवङ्, जुहुविव, जुहुविम रूप बनते है।

आमभावपक्ष में लिट् में रूप जुहाव, जुहुवतुः, जुहुवुः। जुहोथ/जुहविथ, जुहुवथुः, जुहुव। जुहाव/जुहव, जुहुविव, जुहुविम।

इस प्रकार लिट् में प्रथमपुरूषैकवचन में तिप् में सम्पूर्ण छः रूप है - जुहाव, जुहवांचकार/ जुहवाञ्चकार, जुहवांबभूव/जुहवाम्बभूव, जुहवामास।

मिप् में सम्पूर्ण 9 नौ रूप है - जुहाव/जुहव, जुहवांचकार/ जुहवाञ्चकार, जुहवांचकर/जुहवाञ्चकर, जुहवांबभूव/जुहवाम्बभूव, जुहवामास। कृ, भू अस् इनके अनुप्रयोग से निष्पन्न रूप प्रदत्त है।

लिट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जुहवाञ्चकार	जुहवाञ्चक्रतुः	जुहवाञ्चक्रुः
मध्यपुरुषः	जुहवाञ्चकर्थ	जुहवाञ्चक्रथुः	जुहवाञ्चक्र
उत्तमपुरुषः	जुहवाञ्चकार जुहवाञ्चकर	जुहवाञ्चक्रव	जुहवाञ्चक्रम

लिट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जुहवांचकार	जुहवांचक्रतुः	जुहवांचक्रुः
मध्यपुरुषः	जुहवांचकर्थ	जुहवांचक्रथुः	जुहवांचक्र
उत्तमपुरुषः	जुहवांचकार जुहवांचकर	जुहवांचक्रव	जुहवांचक्रम

लिट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जुहवाम्बभूव	जुहवाम्बभूतुः	जुहवाम्बभूवुः
मध्यपुरुषः	जुहवाम्बभूविथ	जुहवाम्बभूथुः	जुहवाम्बभूव
उत्तमपुरुषः	जुहवाम्बभूव	जुहवाम्बभूविव	जुहवाम्बभूविम

लिट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जुहवांबभूव	जुहवांबभूतुः	जुहवांबभूवुः
मध्यपुरुषः	जुहवांबभूविथ	जुहवांबभूथुः	जुहवांबभूव
उत्तमपुरुषः	जुहवांबभूव	जुहवांबभूविव	जुहवांबभूविम

लिट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जुहवामास	जुहवामासतुः	जुहवामासुः
मध्यपुरुषः	जुहवामासिथ	जुहवामासथुः	जुह्वामास
उत्तमपुरुषः	जुहवामास	जुहवामासिव	जुह्वामासिम

लुट् के प्रथम प्रथमैकवचन में तिप्, शप् –अपवाद में तास्, तास् आर्धधातुक होने से सार्वधातुकार्धधातुकयो से हु के उकार को गुण ओकार, ति के स्थान पर डा आदेश, डा ङित् होने से तास् की टि आस् का लोप होकर **होता** रूप बनता है। इस प्रकार आगे के रूप छात्र स्वयं समझें।लुट् में रूप – **होता होतारौ होतारः। होतासि होतास्थः होतास्थ। होतास्मि होतास्वः होतास्मः।**

लृट् के प्रथमपुरूषैकवचन में तिप्, शप् अपवाद में स्य प्रत्यय, आर्धधातुक होने से सार्वधातुकार्धधातुकयोः से हु के उकार को गुण ओकार आदेश, आदेश प्रत्ययययोः से सकार को षकार होकर **होष्यति।** आर्धधातुकस्येड्वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध। लृट् में रूप – **होष्यति होष्यतः होष्यन्ति। होष्यसि होष्यथः होष्यथ। होष्यामि होष्यावः होष्यामः।**

टिप्पणियाँ

लोट् के प्रथमपुरूषैकवचन में तिप्, शप्, शप् को श्लु, धातु को द्वित्व अभ्यासकार्य होकर जु हु ति, तिप् सार्वधातुक होने से सार्वधतुकार्धधातुकयोः से हु के उकार को गुण ओकार, एरूः से ति के इकार को उकार होकर **जुहोतु** रूप सिद्ध होता है। तातङ् पक्ष में **जुहुतात्** रूप बनता है। तस् में **जुहुताम्,** झि में **जुहुतु,** सिप् में जुझल्भ्योहर्धिः से हि को धि आदेश होकर **जुहुधि**, तातङ् पक्ष में **जुहुतात्। जुहुतम्, जुहुत।** उत्तम पुरूष में आङुत्तमस्य पिच्च सूत्र से आट्, अचि श्नु धातुभ्रुवां "वारियडुवङौ (6.4.77) से उवङ् आदेश की अपेक्षा हुश्नुवोः सार्वधातुके (6.4.87) से यण् प्राप्त उससे भी परे सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण ओकार तथा ओकार को अवादेश होकर **जुहवानि, जुहवाव, जुहवाम्** रूप होते है।

लङ् में अट् आगम में प्रथमपुरूषैकवचन में तिप्, शप् , शप् का श्लु, श्लौ से धातु को द्वित्व, अभ्यास कार्य, हु के उकार को गुण ओकार इतश्च से तिप् के इकार का लोप होकर **अजुहोत्** रूप सिद्ध होता है। तस् में **अजुहुतम्,** झि में झकार को अत् आदेश प्राप्त अभ्यस्तसंज्ञक होने से उसका बाध होकर सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च सूत्र से झि को जुस् आदेश, अनुबन्धलोप होकर अजुहु उस् स्थिति में हुश्नुवोः सार्वधातुके से यण् प्राप्त तव अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

(सूत्र सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च 3.4.109 अभ्यस्त से परे सि को जुस् आदेश होता है।)

21.12 जुसि च॥ (7.3.83)

सूत्रार्थ - अजादि जुस् परे होने पर इगन्त अंग को गुण हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधिसूत्र में जुसि (7/1) और च अव्यय दो पद है। क्सस्याचि इत्यचः अचि (7/1) इसकी अनुवृत्ति है। मिदेर्गुणः से गुणः (1/1) पद की अनुवृत्ति है। अंगस्य का अधिकार है। इकोगुणवृद्धी परिभाषा से इकः पद प्राप्त होता है। उसका अंगस्य इसका विशेषण है। अतः तदन्तविधि में इगन्तस्य अंगस्य यह अर्थ प्राप्त है। अचि यह जुसि का विशेषण है। अतः यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे परिभाषा से तदादिविधि में अजादौ जुसि यह अर्थ प्राप्त है। सूत्रार्थ होता है - अजादि जुस् परे होने पर इगन्त अंग के स्थान पर गुण होता है। अलोऽन्त्यस्य की परिभाषा से यह गुण इगन्त अंग के अन्त्य इक् के स्थान पर होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से अ जुहु+उस् स्थिति में अजादि उस् परे है। अतः जुसि च सूत्र से इगन्त अंग के अन्त्य इक् उकार को गुण ओकार तथा अवादेश तथा सकार को रूत्व एव विसर्ग होकर **अजुहवुः** रूप सिद्ध होता है।

लङ् परस्मैपद में रूप - **अजुहोत्, अजुहुताम् अजुहवुः। अजुहोः अजुहुतम् अहुहुत। अजुहवम्, अजुहुव, अहुहुम।**

विधिलिङ् में हु धातु से तिप्, शप् , शप् की श्लु, श्लौ से धातु को द्वित्व, अभ्यासकार्य, यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो डिच्च सूत्र से यासुट् टित् होने से आदि अवयव, होकर जुहु यास्+ति। सुट् तिथोः से तकार को सुट् आगम, जुहुयास् स् ति। लिङ् सलोपोऽनन्त्यस्य से दोनों सकार का लोप, गुण

निषेध होकर **जुहुयात्** रूप बनता है। विधिलिङ् में रूप - **जुहुयात् जुहुयाताम् जुहुयुः। जुहुयाः जुहुयातम् जुहुयात। जुहुयाम्, जुहुयाव, जुहुयाम।**

आशीर्लिङ् में हु धातु से तिप्, यासुट्, सुट् होकर हुयास् स्+ति स्थिति बनती है। यहां किदाशिषि से यासुट् कित् होता है, यासुटः लिङ्शिषि से आर्धधातुक संज्ञा होकर प्राप्त गुण का क्ङिति च से निषेध होता है। ति के इकार का लोप तथा, स्कोः संयोगाद्योरन्ते च से संयोगादि सकार लोप, अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से हु के उकार को दीर्घ होकर **हूयात्** रूप सिद्ध होता है।

आशीर्लिङ् परस्मैपद में रूप - **हूयात्, हूयास्ताम्, हूयासुः। हूयाः, हूयास्तम्, हूयास्त। हूयासम्, हूयास्व, हूयास्म।** यहा शप् की प्राप्ति ही नहीं होती अतः श्लु भी नहीं होता है और श्लु नहीं होने से द्वित्व भी नहीं होता।

लुङ् में हु धातु से अट्, तिप् शप् अपवाद में च्लि, च्लि को सिच्, इकार लोप, अपृक्त हल् को ईट् आगम, होकर अ हु स् ई त् स्थित बनती है। इट् आगम प्राप्त किन्तु उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध। सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु सूत्र से हु के उकार को वृद्धि औकार तथा सकार को षकार तथा वर्ण सम्मेलन होकर अहौषीत् रूप सिद्ध होता है। ईट् आगम् तिप् और सिप् में होता है अन्यत्र वृद्धि, षत्व, टुत्व कार्य होकर रूप बनते है।

लुङ् में रूप - **अहौषीत्, अहौष्टाम्, अहौषुः। अहौषी, अहौष्टम्, अहौष्ट। अहौषम्, अहौष्व, अहौष्म।**

लृङ् में अट् प्रथमपुरूष एकवचन में तिप्, इकार लोप, शप् का बाधकर स्यतासीलृलुटोः से स्य प्रत्यय, सार्वधातुकार्धधातुकयोः से हु के उकार को गुण ओकार तथा सकार को षत्व हाकर **अहोष्यत्** रूप सिद्ध होता है।

लृङ् में रूप - **अहोष्यत्, अहोष्यताम् अहोष्यत। अहोष्यः अहोष्यतम् अहोष्यत। अहोष्यम् अहोष्याव, अहोष्याम।**

पाठगत प्रश्न 21.2

1. जुसि च का एक उदाहरण लिखिए।
2. भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च् का अर्थ क्या है?
3. हु धातु का अर्थ क्या है?
4. श्लौ का अर्थ क्या है?
5. हु धातु से लिट् प्रथमपुरूष एकवचन में कितने रूप हैं?
6. शप् को श्लु विधायक सूत्र कौन है?

7. अदभ्यस्तात् का अर्थ क्या है?
8. हु धातु के विधिलिङ् प्रथमपुरूष एकवचन में रूप क्या हैं?
9. हु धातु के आशीर्लिङ प्रथमपुरूष एकवचन में रूप क्या हैं?
10. भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च से कार्य नित्य है या अनित्य?

दिवादिगणः

दिवु, क्रीडा, विजिगीषा, व्यवहार, द्युति, स्तुति, मोद, मद, स्वप्न, कान्ति, गतिषु अर्थ में सेट् परस्मैपदी, और उदित धातु है। वर्तमान काल की विवक्षा में लट् प्रथमपुरूष एकवचन में तिप्, अनुबन्ध लोप होकर दिव्+ति। उसके बाद तिप् सार्वधातुक होने से कर्ता अर्थ में कर्तरिशप् से शप् प्राप्त होता है।

21.13 दिवादिभ्यः श्यन्॥ (3.1.69)

सूत्रार्थ - कर्तवाचक सार्वधातुक परे होने दिवादिगण की धातु से श्यन् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में दिवादिभ्यः (5/3) श्यन् (1/1) ये दो पद है। कर्तरिशप् से कर्तरि (7/1) की एवं, सार्वधातुके यक् से सार्वधातुके (7/1) पद की अनुवृत्ति है। दिव् आदिः येषां ते दिवादयः तेभ्यः दिवादिभ्यः इति तद्गुण संविज्ञान बहुव्रीहिसमासः। प्रत्ययः (1/1) परश्च (1/1) का अधिकार होता है। धातोः (6/1) का अधिकार आता है। दिवादि दशगणों में चतुर्थ है। सूत्रार्थ होता है कर्ता अर्थ में सार्वधातुक प्रत्यय परे हो तो दिवादिगणपठित धातुओं से परे श्यन् प्रत्यय होता है। यह सूत्र कर्तरिशप् का अपवाद है। श्यन् के शकार की लशक्वतद्धिते से इत्संज्ञा, नकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा होती है। य शेष रहता है। शकार का अनुबन्ध सार्वधातुकसंज्ञार्थ और नकार का अनुबन्ध ञ्नित्यादिर्नित्यम् सूत्र से आदि उदात्त स्वरार्थ है। विशेष - श्यन् के शित् होने से तिङ्शित् सार्वधातुकम् सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा। इस सार्वधातुकसंज्ञक श्यन् प्रत्यय के अपित् होने से सार्वधातुकमपित् से ङित्वद्भाव होता है जिसका फल गुणनिषेध है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से दिव्+ति स्थिति में कर्ता अर्थ में सार्वधातुक परे है। अतः इस सूत्र से शप् का बाह्य होकर श्यन् प्रत्यय एवं अनुबन्धलोप दिव्+य+ति स्थिति में सार्वधातुकसंज्ञा में पुगन्त लघूपधस्य से लघूपधा को गुण प्राप्त किन्तु ङित्वद् होने से किंङति च से निषेध। तब-

24.14 ह लि च॥ (1.8.77)

सूत्रार्थ - हल् परे होने पर रेफान्त और इकारान्त धातु की उपधा को दीर्घ हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में ह लि (7/1), च अव्यय ये दो पद है। सिपि धातोरुर्वा सूत्र से धातोः (6/1) की, र्वोरूंपधाया दीर्घ इकः सूत्र से र्वोः (6/2) उपधायाः (6/1), दीर्घ (1/1), इकः (6/1) इनकी अनुवृत्ति होती है। र् च व् च र्वो तयोः र्वोः इति इतरेतरद्योगद्वन्द्व। र्वोः इति

धातु का विशेषण है। अतः तदन्तविधि में रेफान्त और वकारान्त का अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ होता है - हल् परे होने पर रेफान्त और इकारान्त धातु की उपधा को दीर्घ होता है।

उदाहरण - रेफान्त का उदाहरण विस्तीर्णम् है। दीव्यति वकारान्त का उदाहरण है।

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से दिव्+यति स्थिति में हल् परे है। अतः हलि च प्रकृत सूत्र से उपधा दीर्घ होकर दीव्यति रूप सिद्ध होता है। तस् आदि रूप स्वयं सिद्ध करने चाहिए।

लट् परस्मैपद में रूप-दीव्यति, दीव्यतः, दीव्यन्ति। दीव्यसि, दिव्यथः, दीव्यथ। दीव्यामि, दीव्यावः, दीव्यामः।

लिट् में धातु सेट् होने से वलादिलक्षण, इट् आगम, पित् प्रत्ययो में लघूपधा गुण होता है। अपित् में नही। असंयोगाल्लिट् कित् से कित् विधान होने से क्ङिति च से निषेध होता है प्रक्रिया स्वयं करे।

लिट् परस्मैपद में रूप - दिदेव, दिदिवतुः, दिदिवुः। दिदेविथ, दिदिवथुः, दिदिव। दिदेव, दिदिविव,, दिदिविम।

लुट् में प्रथमपुरूषैकवचन में तिप्, श्यन्, श्यन् को तास्, इट् आगम, होकर दिव् इ+तास्+ति। तिप् को डा आदेश, टि का लोप होकर देविता रूप सिद्ध होता है।

लिट् परस्मैपद में रूप - देविता, देवितारौ, देवितारः। देवितासि, देवितास्थः, देवितास्थ। देवितास्मि, देवितास्वः, देवितास्मः।

लृट् प्रथमपुरूषैकवचन में तिप्, श्यन् को स्य इट् आगम, पुगन्तलधूपधस्य च से लधूपधा को गुण, सकार को षत्व होकर देविष्यति रूप बनता है। रूप - देविष्यति देविष्यतः, देविष्यन्ति। देतिष्यसि, देविष्यथः देविष्यथ। देविष्यामि। देविष्यावः देविष्यामः।

लोट् में श्यन्, हलिच से उपधादीर्घ होकर रूप सिद्ध होते हैं - दीव्यतु तातङ् में दीव्यतात्, दीव्यताम् दीव्यन्तु। दीव्य तातङ में दीव्यतात् दीव्यतम् दीव्यत। दीव्यानि दीव्याव दीव्याम।

लङ् से अट्, श्यन्, उपधादीर्घ होकर रूप सिद्ध होते हैं - अदीव्यत्, अदीव्यताम्, अदीव्यन्। अदीव्यः, अदीव्यतम् अदीव्यत। अदीव्यम् अदीव्याव अदीव्याम।

विधिलिङ् तिप् में इकार लोप श्यन्, उपधादीर्घ, यासुट्, सुट्, लिङ् सलोपोऽनन्त्यस्य से दोनों सकार का लोप,होकर दीव् य त्। अतोयेय से इय् लोपो व्योर्वलि से यकार लोप दीव् य इ त् तथा आदः गुणः गुण एकार होकर दीव्येत् रूप सिद्ध होता है।

विधिलिङ् में रूप- दीव्येत् दीव्येताम्, दीव्येयुः। दीव्येः दीव्येतम् दीव्येत।दीव्येयम् दीव्येव दीव्येम।

आशीर्लिङ् उपधादीर्घ, यासुट् कित् होने से लघूपधागुण निषेध रूप सिद्ध होते है। विधिलिङ् में रूप - दीव्यात्, दीव्यास्ताम्, दीत्यासुः। दीव्याः, दीव्यास्तम् दीव्यास्त। दीव्यासम् दीव्यास्व दीव्यास्म।

लुङ् से अट्, तिप् इकार लोप, श्यन् अपवाद में च्लि को सिच् इट् आगम उपधादीर्घ अ दीव् इ स् त्। तकार अपृक्त होने से ईट् आगम होकर अदीव् इ स् ई त्। सकार लोप एवं लघूपधागुण होकर अदेवीत् रूप सिद्ध होता है। लुङ् में रूप - अदेवीत्, अदेवीष्टाम्, अदेवीषुः। अदेवीः अदेवीष्टम्, अदेवीष्ट।, अदेवीषम्, अदेवीष्व, अदेवीष्म।

लृङ् से अट्, प्रथम पुरुष एकवचन में तिप् के इकार लोप, श्यन् अपवाद में स्य प्रत्यय अ दिव् स्य त्। लघूपधागुण एवं सकार को षकार होकर अदेविष्यत् रूप सिद्ध होता है। लृङ् में रूप - अदेविष्यत् अदेविष्यत् अदेविष्यताम् अदेविष्यन्। अदेविष्यः अदेविष्यतम् अदेविष्यत। अदेविष्यम् अदेविष्याव अदेविष्याम।

पाठान्त प्रश्न 21.3

1. दिवादिगण में क्या विकरण होता है?
2. श्यन् विकरण विधायक सूत्र क्या है?
3. दिव् धातु का अर्थ क्या है?
4. दीव्यति में दीर्घ किस से होता है?
5. दिवादिगण गणों में कौन सा है?
6. श्यन् प्रत्यय किसका अपवाद है?

पाठ का सार

इस पाठ में अदादिगण, जुहोत्यादिगण, दिवादिगण इन तीन गणों की समालोचना विहित है। उनमें से सर्वप्रथम अदादिगण की प्रथम धातु अद् के विषय में आलोचना की गई। वहाँ अद् धातु में अदिप्रभृतिभ्यः शप् , लिट्यन्यतरस्याम्, शसिवासिधसीनां च, इङ-त्यर्तिव्ययतीनाम्, हु झल्भ्यो हे र्धिः, अदः सर्वेषाम् लुड्सनोर्घस्लृ आदि सूत्रों की व्याख्या की गई है। उसके बाद हु धातु में जुहोत्यादिभ्यःश्लुः, श्लौ, अदभ्यस्तात्, भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च, जुसि च आदि सूत्रों की व्याख्या की गई है। उसके बाद दिव् धातु में दिवादिभ्यःश्यन् से श्यन् विकरण होता है। हलि च से उपधादीर्घ होता है। इस पाठ में लुक्श्लु लुप् का वैशिष्टय दिखाया गया है।

पाठांत प्रश्न

1. लिट्यन्यतरस्याम् सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. शसिवासिधसीनां च सूत्र की व्याख्या कीजिए।

3. हु झल्भ्यो हेर्धिः सूत्र की व्याख्या कीजिए।
4. लुड्सनोर्घस्लृ सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. जुहोति को ससूत्र सिद्ध कीजिए।
6. भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च सूत्र की व्याख्या कीजिए।
7. दिवादिभ्यःश्यन् सूत्र की व्याख्या कीजिए।
8. अदेवीत् को ससूत्र सिद्ध कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1

1. दश।
2. अदिप्रभृतिभ्यः शप्।
3. लुड्सनोर्घस्लृ।
4. अद् से परे अपृक्त को अट् होता है।
5. हु झल्भ्यो हेर्धिः।
6. शसिवासिधसीनां च।
7. लिट्यन्यतरस्याम्।
8. आदि।
9. भक्षण।
10. जघास, आद दो रूप।

21.2

1. अजुहवुः।
2. भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च से लिट् में आम् और श्लु के समान कार्य हो।
3. छान और भक्षण।

टिप्पणियाँ

4. धातु को द्वित्व।

5. जुहाव,जुहवांचकार/जुहवाञ्चकार, जुहवांबभूव/जुहवाम्बभूव, जुहवामास।

6. जुहोत्यादिभ्य:श्लु:।

7. अभ्यस्त धातु से परे झकार को अत्।

8. जुहुयात्।

9. हूयात्।

10. अनित्य।

21.3

1. श्यन्।

2. दिवादिभ्य:श्यन्।

3. दिवु क्रीडा विजिगीषा व्यवहार द्युति स्तुति मोद मद स्वप्न कान्ति गति अर्थहै।

4. हलि च।

5. चतुर्थ।

6. शप्।